"स्पंदन"

समाचार - पत्रिका

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था, चाचियावास (अजमेर) का त्रैमासिक समाचार पत्र

(सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1958 के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था पंजीयन सं. 19/ए.जे.एम./87-88)

केवल निजी वितरण हेतु | संयुक्त अंक (33-34) वर्ष (8) | सितम्बर 2016 से फरवरी 2017

बच्चों को पढ़ाने या सिखाने के मुद्दे हमेशा से हमारा ध्यान आकर्षित करते रहे है अधिकांशत: शिक्षक इस बात पर एक मत है कि शिक्षा के साथ अनुशासन बहुत आवश्यक है पर अनुशासन का क्या दायरा है और क्या सीमाएं है, यह सदैव तर्क का विषय रहा है। मेरी स्कूली शिक्षा के समय पर एक शिक्षिका थी, जो अनुशासन को तोड़ने पर बच्चों की हथेलियों पर बाल पेन चुभाती थी सभी बच्चे उनकी कक्षा में कोई बात नही करते; चुपचाप बैठते, उस समय के बच्चों में ब्लड प्रेशर, तनाव, डिप्रेशन आदि की समस्याएं नहीं थी अन्यथा उस समय के सभी बच्चे आदरणीय शिक्षिका की वजह से इन सभी बीमारियों से पीड़ित होते। वर्तमान समय में उस तरह की शिक्षिका और आज के बच्चों की स्थिति का अंदाजा लगाना भी भयावह लगता है। क्या अनुशासन के नाम पर इस तरह का आचरण बच्चों पर अत्याचार नही हैं?

ना जाने उन आदरणीय शिक्षिका के इस आचरण की वजह से कितने बच्चों ने शिक्षा और स्कूल के नाम पर भविष्य में डरे एवं सहमे हुये शिक्षा ली होगी ओर ना जाने कौन-कौन सी ऐसी उनकी प्रतिभाओं और योग्यताओं ने बच्चों के अन्दर ही दम तोड़ दिया होगा जो आगे पल्लवित हो सकती थी।

आज भी इस तरह के शिक्षक-आचरण हमारा अनायास ही ध्यान आकर्षित करते है अत: इस अंक में हम इसी विषय पर यूनिसेफ के तकनीकी सहयोग से राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर द्वारा प्रकाशित समझ पत्र के लेख को पढ़कर स्वयं समझते हुये दूसरे शिक्षकों एवं अभिभावकों को समझाने का प्रयास करेंगे।

इसी क्रम में खलील जिब्रान का एक गीत जो ऐसी परिस्थितियों हेतु उपयुक्त है उसे भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुख्य सम्पादक

तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे बच्चे नही हैं?

तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे बच्चे नही हैं
वे जीवन के अपने ही प्रति इच्छा के बेटे और बेटियां है
हालांकि वे तुम्हारे साथ हैं तुम्हारे नही है।
तुम उन्हें अपना प्यार दे सकते हो अपने विचार नही
क्योंकि उनके पास अपने विचार है।
तुम उनके जिस्म को घर दे सकते हो
उनकी आत्मा को नही
क्योंकि उनकी आत्मा आने
वाले कल के घर में बसती है
जहां तुम सपनों में भी नही जा सकते।
तुम उन्हे जैसा बनाने की कोशिश कर सकते हो
उन्हें अपना जैसा बनाने की कोशिश भी कर सकते हो
पर उन्हें अपने जैसा बनाने की कोशिश न करो।
क्योंकि जीवन पीछे की ओर नही चलता
न पीछे छूट चुके कल पर ठहर सकता
तुम वो कमान हो जिससे तुम्हारे बच्चे
जिंदा तीरों की तरह चल चुके है।

खलील जिब्रान

लिखते रहिए

आपके सुझावों एवं फीड बैक का हमेशा इंतजार रहता है, अत: कृपया लिखते रहिए।

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक : राकेश कुमार कौशिक

: सम्पादन समिति :

क्षमा आर. कौशिक, तरुण शर्मा, नानूलाल प्रजापति, लक्ष्मणसिंह चौहान

संस्था द्वारा संचालित विभिन्न सेन्टर / कार्यक्रम

LET'S LEARN TOGETHER

All Children Can Learn

Ummeed, Pushkar

Udaan, Rawatbhata

Sparsh, Centre supported, Sense International, India

Member Secretary in Local Level Committee, Ajmer

Collab. Org. Childline Ajmer

बच्चों के बारे में मान्यताएं और विश्वास

खण्ड-एक

विद्यालयी शिक्षा का सरोकर बच्चों का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास है। और यह एक प्रकार की प्रक्रिया (बालकेन्द्रित और रूचिपूर्ण) से चलकर ही हासिल किया जा सकता है।

हमारे मन के आग्रह प्रक्रियाओं और सम्बन्धों पर गहरा असर डालते हैं। इसलिए बच्चों के साथ कोई भी सार्थक प्रक्रिया शुरू करने से पूर्व हमें यह तय कर लेना पड़ेगा कि उनके बारे में हमारी क्या धारणाएं हैं, किस तरह की मान्यतएं और विश्वास हैं ?आधार खंड में बच्चों के बारे में विश्वास व मान्यताएं स्थापित करने की कोशिश है। जिनके आधार पर स्कूल की समस्त प्रक्रियाएं तय होती है।

इस खंड को पढ़ते समय हमेशा यह सोचते रहना होगा कि बच्चों के बारे में अगर यह बात सही या गलत है तो इसका क्या असर होगा- हमारे स्कूल और कक्षा में काम करने के तौर-तरीके पर, प्रयोग होने वाली सामग्री पर, योजना, कक्षा व्यवस्था और मूल्यांकन पद्धतियों पर ....या कि अन्य किसी पहलू पर।

आधार खंड में हैं :-

1.1 हमारे बच्चे

हमारे बच्चे

कैसे हैं हमारे बच्चे, बच्चे जिज्ञासु होते हैं, बच्चों के धरातल पर उतर कर बातें कहें, न खाली घड़ा न कोरी स्लेट, अपने काम को दिखाना चाहते हैं बच्चे, एकरसता से ऊबते हैं बच्चे, खुद करके ज्यादा सीखते हैं बच्चे, हमारे पूर्वाग्रह जाते हैं बच्चों में, बच्चों के साथ सार्थक क्रियाएं हों ....।

1.2 हमारे बच्चे

कैसे हैं हमारे बच्चे?

बच्चे खाली घड़ा या गीली मिट्टी

हमारे बीच में बच्चों को लेकर विभिन्न प्रकार की धारणाएं मौजूद हैं जैसे बच्चा खाली घड़ा है जिसे भरना है या गीली मिट्टी के समान हैं जिन्हें आकार देना है। आप क्या मानते हैं?

बच्चों में विविधताएं होती हैं, उनकी जरूरतें अलग-अलग हैं, उन्हें उचित वातावरण देना है। बच्चे असीम सम्भावनाएं लेकर पैदा होते हैं। हमें उन संभावनाओं को विकसित करना है। बच्चे महत्वपूर्ण हैं। बच्चों के विकासक्रम को पहले चरण में ही कैसे पता करेंगे कि वह क्या बनना चाहते हैं। हम हैं तभी बच्चे हैं, इस मुगालते से उबरें। बच्चा खाली घड़ा नही हैं। वह पहले से कई क्षमताएं, अनुभव, ज्ञान और जानकारी लेकर स्कूल आता है।

हमारा काम उनको एक ढांचे में ढालना नही है। हमारी भूमिका सहयोग की और उनकी आवश्यकताओं, क्षमताओं की पहचान करके इन्हें स्वरूप/अवसर देने की है।

बच्चे सृजनशील होते हैं उनकी जरूरतें बदलती रहती हैं। हम शिक्षा देने वाले दाता नही हैं। शिक्षा बच्चों का हक है। हम सीखने को संभव बनाने वाले मददगार हैं। हमें बच्चों की क्षमताओं का सार्थक उपयोग करना है। जहां तक संभव हो सहयोग जरूर करें। वे शिक्षक सचमुच सौभाग्यशाली हैं जो कक्षा में बच्चों के साथ काम कर रहे होते हैं।

बच्चे जिज्ञासु होते हैं

बच्चे सृजनशील होते हैं और हम मददगार?

जब तब बच्चों की स्वाभाविक इच्छा पूरी नही होती वे नई-नई बातें जानने में लगे रहते है। बच्चे आसानी से सहमत नहीं होते। जब तब बच्चों के लिए सार्थक काम मिलता है, करते हैं उसके बाद, नये काम में लग जाते हैं। बच्चों का मन चंचल होता है। जो काम उन्हें रूचता है, उसे देर तक करते रहते हैं। किसी क्रियाकलाप से यदि बच्चों का ध्यान बंट रहा है तो इसका सीधा अर्थ है कि प्रक्रिया में गड़बड़ है।

बच्चों के धरातल पर उतर कर बातें कहें

जानने की इच्छा बच्चों को सक्रिय बनाती है

अक्सर हम बड़े लोग गलती से बचने के लिए दोष बच्चों पर थोप देते हैं। बच्चों को समझने के लिए उनके नजरिये से ही देखना चाहिए। बड़ों के मन में सहनशीलता नहीं होती वे अपने मानक से तनिक भी दायें बायें हिलते डुलते नही है। बच्चों का नज़रिया हमेशा बड़ों से व्यापक होता है। उनका तर्क बड़ा होता हैं। बच्चों के बारें में पूर्वाग्रह लेकर चलना गलत है। उन्हें समझना बहुत जरूरी है। उनके अनुभवों व नज़रिये को वरीयता देना ज़रूरी है।

न खाली घड़ा, न कोरी स्लेट

बच्चों के मन के करीब जाना होगा

कुछ लोग कहते हैं कि बच्चे खाली घड़े, कुछ इन्हें गीली मिट्टी कहते हैं, तो कुछ को बच्चों का मन कोरी स्लेट नजर आता है जिस पर उन्हें अपने अनुभव और ज्ञान को अंकित भर करना है। अगर इन पर विचार करें तो पायेंगे कि यही दृष्टिकोण एक शिक्षक के रूप में हमारे कार्य की दिशा तय करता है कि हमें अपनी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को कैसे आगे बढ़ाना हैं।

क्या हम यह मान लें कि इस तरह के कथन हमारे आज के बच्चों पर लागू होते हैं? उत्तर हां तो इस बिन्दु पर हमें अवश्य विचार करना पड़ेगा कि कैसे? यदि हम ना पर सहमत होते है तो फिर कौन सा कथन आज के संदर्भ में प्रासंगिक होगा, इस पर सोचने की जरूरत है। कौन अपने बच्चे को महान नहीं बनाना चाहता, परन्तु क्या सभी बन पाते हैं?

यह जरूरी नहीं है कि सारे बच्चे एक ही सांचे में ढलें क्योंकि हर बच्चे की सीखने की क्षमता और रूचि अलग-अलग होती है। उसे सीमा में बांधना कठिन हैं। हम सब जानते है कि बच्चे को सीखने के अवसर और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना बहुत

जरूरी है, ताकि अपनी क्षमता के अनुसार बच्चों का स्वाभाविक विकास हो सके। हमें वे परिस्थितियां और अनुभव रचने तथा संचित करने है, जिनकी मदद से वे स्वयं का विकास करने में सक्षम बन पाएं।

बच्चे लगातार विकसित होते रहते है। उनमें विकास की अपार सम्भावनाएं रहती है। समय के साथ उनके स्वरूप और स्वभाव में बदलाव आता रहता है। उनमें बराबर वृद्धि होती रहती है। वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की अपने आप कोशिश करते रहते हैं। परन्तु उन्हें सही देखभाल की आवश्यकता रहती है।

बच्चों में सीखने की असीमित क्षमता रहती है। वे बड़ों को देखकर बहुत कुछ सीखते रहते है। वे खुद प्रयोग करके सीखने पर बल देते हैं। वे एक दूसरे को सुनते हैं, स्वयं अनुभव करके जानते हैं। बिना शिक्षक, बिना गाईड के भी वे खुद से सीखते रहते हैं। ऐसी कोई चीज नहीं, जिसे सीख पाना बच्चो के वश में नहीं हैं। वे दुनिया की हर चीज सीख सकते हैं। बस मौका और सही परिस्थिति की आवश्यकता होती है।

बच्चों की सीखने की क्षमता और रुचि अलग-अलग होती है

अपने काम को दिखाना चाहते हैं बच्चे

अपने घर परिवार और परिवेश में रहने से स्कूल आने के अपने शुरुआती सात-आठ वर्ष में बच्चे बहुत तेजी से सीखते हैं। वे जो सीखते हैं उसे अपना लेते हैं। पुरानी चीजों के साथ नई जानकारियां भी जुटाते रहते हैं। परन्तु बचपन उनकी यादों में सदैव बना रहता है। गली-मुहल्लों में सभी साथियों के साथ खेलते कूदते भी वे बहुत कुछ सीखते रहते हैं। इस उम्र में इनमें सीखने की अपार क्षमता होती है, वे अपने आस पास की चीजो के बारे में तेजी से जानकारियां ग्रहण करते है। अपनी जुटाई गई जानकारियों व काम को वे दिखाना चाहते हैं।

अपना काम और प्रयास दिखाना चाहते हैं बच्चे।

एकरसता से ऊबते हैं बच्चे

बच्चे चंचल प्रवृति के होते हैं। नई-नई चीजों को जानने देखने को लालायित रहते हैं। जो भी देखते हैं उसे समझने की कोशिश करते हैं। क्या, क्यों, कैसे हो रहा है, यह जानने की जिज्ञासा उनमें बनी रहती है। उनके कौतुहल का अंत नहीं होता। बच्चे एकरसता से जल्दी ही ऊब जाते हैं पर जिस काम को करने में उनको मजा आता है, उनमें बिना हारे थके घण्टों लगे रहते हैं। उनके शब्दकोष में थकने ऊबने जैसे शब्दों की कोई जगह नहीं होती। उन्हें विविधता पसन्द होती है। हां, जिन चीजों में उनकी रुचि नही है अर्थात जिनको करने में उनको मजा नहीं आता, वह उनके लिए व्यर्थ है। वे जो भी करते हैं आनन्द के साथ करते हैं। वे हमेशा कुछ न कुछ सीखने करने को तैयार रहते है। अपने तरीके भी खोजते रहते है।

बचपन के प्रयास गहरा असर डालते हैं।

बच्चे कल्पनाशील होते हैं। चीजों को सीधे सपाट अर्थ में नहीं लेते। उनकी दुनिया में हर किसी का एक नाम होता है। वे तुकबन्दियां, चिढ़ाने की चिढ़े अपने से बनाते और प्रयोग करते रहते है, अपने खेल के नियम बनाने और उनमें जरूरत के हिसाब से बदलाव करने में भी उनको महारत होती है। उन्हें नई-नई बातें गढ़ने में मजा आता है।

खुद करके ज्यादा सीखते हैं बच्चे

बच्चे किन्हीं और तरीकों की बजाय खुद करके सबसे अधिक सीखते है। छोटे समूहों में साथियों के साथ क्रियाएं करते हुए उनके सीखने की रफ्तार और बढ़ जाती है। वे देख, सुन, नकल करके सीखना तो शुरू कर देते हैं, पर क्रमशः साथियों के साथ स्वयं करके ज्यादा तेजी से सीखते है। हमारे समाज की संरचना ही समूह की तरह है। बच्चे भी आपस में छोटे छोटे समूह बनाकर बहुत कुछ करते रहते हैं जैसे उनके खेल कुछ हासिल करने का जुगाड़, कहीं आना जाना, जानकारी इकट्ठा करना....। वे मिलजुल कर सीखना स्वाभाविक रूप से करते हैं। चीजों से जूझते हुए सीखना उन्हें अच्छा लगता है।

बच्चों की पसंद
- विविधता
- आनन्द
- नया सीखना
- नये तरीके
- खुद करना
- समूह में काम
- बहस
- चर्चा
- संघर्ष

सात से ग्यारह आयु वर्ग के बच्चे कार्य और प्रभाव में सम्बन्ध को ढूंढ पाते हैं। घटना के बाद भी बहस चर्चा, अपने मतों का लेन देन करते रहते है। देश, दुनियां की अपने आस-पास की खबरों का विश्लेषण करते हैं। वे अपनों से बड़ों की बातों में दखल देते है। समूह बनाकर खोजबीन करने, घूमने जाने से पहले और लौटकर आने के बाद हर किसी के पास बताने के लिए बहुत कुछ होता है।

बच्चों को चुनौतीपूर्ण कार्य करने में आंनद आता है। खोजी प्रवृति होने के कारण चीजों को तोड़कर वापिस जोड़ने का प्रयास करते है।

हमारे पूर्वाग्रह जाते हैं बच्चों में

आज भी हमारे स्कूलों में बच्चों के बारें में कुछ धारणाएं मौजूद हैं, जैसे कि :-

- बच्चे आमतौर पर बिगड़े हुए होते है, स्कूल उन्हें सुधारने के लिए भेजा जाता है।
- बच्चों पर हर घड़ी निगरानी रखनी चाहिए, नहीं तो वे बिगड़ जायेंगे।
- सीखने के लिए बच्चों पर कड़ा अनुशासन जरूरी है।
- कक्षाओं में उनकी आपसी बातचीत सीखने के क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा है।

बच्चों के प्रति हमारी यह सोच ही हमारे काम और व्यवहार को प्रभावित करती है। हम बातचीत में जितनी अच्छी-अच्छी बातें करते हैं, आदर्श व्यवहार बतलाते हैं वो व्यवहार में अपनाने में नानी याद आ जाती है। बच्चों को उन्हीं चीजों में मजा आता है जिनसे बड़े जूझते हैं। उन्हें वे खुद से अकेले में करना चाहते है। बच्चों ने क्या सोचकर, क्या अलग किया है, इसे नोट जरूर किया जाना चाहिए। अपने पूर्वाग्रहों को सुधारना चाहिए, बच्चों को नहीं।

बच्चों को लेकर कुछ पूर्वाग्रह हैं।

बच्चों को नापसंद

- औपचारिकता
- बनावटीपन
- सजावटी वातावरण
- बड़ों का क्रोध
- संवेदनशीलता

बच्चों के साथ सार्थक क्रियाएं हों

बच्चे अनेक चुनौतीपूर्ण कार्य भी सहजता व सरलता से कर लेते हैं। आदिवासी बच्चे कैसे तय करते है कि कब चारागाहों/जंगलों से लौटना है? औपचारिकता बनावटीपन, दिखावा एवं सजावटी वातावरण को बच्चे कतई पसंद नहीं करते।

बच्चों को विविधता अच्छी लगती है। जिन कार्यो में उनकी रूचि अधिक होती है, उनसे उनका ध्यान हटाना मुश्किल होता है। बच्चों की इस खूबी को पहचान कर हमें अपने काम को आसान करने की जरूरत है। बच्चों की अभिरूचि, कौतुहल, आकर्षण व उत्सुकता पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उनके अनुभव करने के ढंग को सीखने के तरीके से जोड़ने की जरूरत है। इस प्रकार बच्चों के स्वाभाविक विकास में मदद की जा सकती है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि हम जो कुछ भी, जिस तरह से करते हैं, बच्चे संदेश के रूप में ग्रहण करते है। हम उन छोटी-छोटी बातों के प्रति बेखबर रहते हैं और वे सीखते रहते हैं। पता तो तब चलता है जब हम उन्हें वैसा करते देखकर अचानक अचंभित अथवा कभी-कभी क्रोधित हो उठते हैं। क्या आपने भी ऐसा कभी देखा है?

ऐसी कौन सी क्रियाएं हो सकती हैं जिनसे बच्चे सार्थक सीखने की ओर लग सकते हैं?

खण्ड - दो

सीखना - सिखाना और पेडागाजी

हम जिस प्रकार के स्कूल को रचने की बात कर रहे हैं, बच्चों में जिस प्रकार के गुणों की कल्पना कर रहे है, वे कुछ निश्चित प्रक्रियाओं से ही चलकर हासिल किए जा सकते है।

यह खंड सीधे तौर पर बच्चों के साथ काम करने के तरीकों को दिशा देने वाला है। इसे बार-बार पढना होगा। बीच-बीच में दिए गए सुझावों के अनुसार अभ्यास करने होगें। इस खंड में है :-

2.1 सीखना - सिखाना

2.2 गतिविधि आधारित शिक्षण

2.3 शिक्षक की भूमिका

2.4 समता और समानता

2.5 समावेशित शिक्षा

2.1 सीखना-सिखाना

क्या है सीखना, मानसिक सक्रियता बनाए रखना जरूरी है। न कठिनाई न कठिन स्थल, शिक्षक का विश्वास बच्चों के सीखने की गति को बढ़ाता है और सीखने के चरण।

2.2 गतिविधि आधारित शिक्षण

क्या है गतिविधि, चिन्तन और जोड़ने की गुंजाईश नही तो गतिविधि नहीं, चुनौती बनाती है गतिविधियों को रोचक, सबकी भागीदारी जरूरी, प्रतिस्पर्धा और चुनौती, सहभागिता और मौके, गतिविधि एक लचीला ढांचा, गतिविधि के चरण, गतिविधि में शिक्षक और बच्चों की भूमिकाएं, अच्छी गतिविधि कक्षा और स्कूल के बाहर भी चलती रहती है, गतिविधियों के प्रकार - मौखिक, लिखित और सामग्री आधारित गतिविधियों, गतिविधि की योजना, चयन और रूपान्तरण।

2.3 शिक्षक की भूमिका : ज्ञानी नहीं सुगमकर्ता

बेहतर शिक्षक कौन, उसकी भूमिका क्या।

2.4 समता और समानता - समतामूलक शिक्षा

समता और समानता क्या, आवश्यकता क्यों, निर्भरता नहीं स्वायत्तता, क्या और कैसे, क्या करें और क्या करने से बचें।

2.5 समावेशित शिक्षा

निःशक्तता के संदर्भ में कानूनी स्थिति, समावेशित शिक्षा की आवश्यकता, समावेशित शिक्षा और कक्षा प्रकियाएं, निःशक्तता को पहचानना।

सीखना - सिखाना

क्या हैं सीखना? और क्या ये वाकई सिखाने की चीज हैं ? ये वे कुछ सवाल हैं जो हमे आप से पूछने होंगे। तभी हम किसी नतीजे तक पहुंच पाएंगे। सीखना बच्चों की स्वाभाविक क्रिया हैं। सीखने के तरीके और रुचियों का भी इस पर गहरा असर होता है। बच्चों को मौके मिले तो वे अपनी रुचि और अनुभव के सहारे अपने स्तर की बातें आसानी से सीख जाते है। बच्चें चीजों को पहले मोटे तौर पर देखते हैं। उन्हे उलटते-पलटते हैं, उनके साथ खेलते हैं और उनका तरह-तरह से इस्तेमाल करके ढेरों बाते पता कर लेते है। चीजों के बार-बार इस्तेमाल और अनुभवों के साथ-साथ सीखने की प्रक्रिया आगे बढती जाती है। बच्चों के अनुभवों को जगह देने से सीखना-सीखाना आसान हो जाता है। स्वतन्त्र चिंतन और सृजनशीलता की जड़ें दरअसल बच्चों की कल्पनाओं में ही छिपी होती है। सीखने-सीखाने की प्रक्रिया मिलजुलकर काम करने का मजेदार अनुभव ही तो है।

सीखना बच्चों की स्वाभाविक क्रिया है कल्पनाशीलता का आधार सीखने के लिए पर्याप्त अवसर जरूरी

सीखने में जब बच्चों के कौतूहल और रुचियों को जगह मिल जाती हैं तो उनका अनुभव करने का ढंग भी महत्वपूर्ण हो जाता हैं, फिर इनके साथ सीखने के तरीके भी कारगर हो जाते हैं। सीखने की असीमित क्षमता बच्चों के लिए अधिक अवसरों की मांग करती हैं। इसलिए बच्चों को ऐसा माहौल चाहिए जहां वे खुद बहुत कुछ कर सकते हो।

सीखने को मजेदार बनानें की कोशिश में कई बार मजा ही मजा रह जाता है और सीखना गायब हो जाता हैं। बहुत समय परिश्रम और पैसा लगाकर भी सीखना नही होता तो नतीजा क्या रहा ? और अंत में क्या मिलता है ?चंद लोगों की तालियां और थोड़ी बहुत सराहना? ऐसी चीजे बच्चों को उबाती हैं। बच्चों को मजा नही आता, वे कहते भी हैं कि कुछ सीख नही रहे। उनकी

स्थिति उस गोदाम की तरह हो जाती हैं जिसमें भरा तो बहुत कुछ गया, पर निकला कुछ नही।

मानसिक सक्रियता बनाए रखना जरुरी

क्या हमने कभी सोचा हैं कि स्कूल में आने वाले बच्चें कितने समय तक दिमागी रुप सें सक्रिय रहते हैं और कितने समय उनका दिमाग बन्द रहता हैं?

सीखने का एक महत्वपूर्ण संकेत मानसिक सक्रियता हैं। इसे बढाना होगा। और अधिक पैनापन लाना होगा, इसके लिए हर स्तर की गतिविधियां सोचनी होगी। गतिविधियों में सहजता हो, सस्पेंस हो, करंट हो तो वे असरदार होती हैं। रोचकता भी बहुत जरुरी हैं जो गतिविधि के तरीकों, सामग्री के इस्तेमाल करने के ढंग में शामिल होनी चाहिए यदि ऐसा हो तो हर स्तर पर मानसिक सक्रियता बनी रहती है। जो कि सीखने के लिए सबसे जरुरी है।

तरीकों में इस प्रकार का खुलापन हो कि हर एक के स्तर पर मानसिक क्रिया हो। यह जरुर ध्यान रखे कि यह अनायास आये। ऐसा न लगे कि इसे जबरन जोड़ा गया हैं। **''सोचो'' कहने से कोई नही सोचता।** इसके लिए वैसा ही माहौल बनाना होता है।

रोचकता, चुनौती और मानसिक सक्रियता सीखने के अवसर बढ़ाती है

न कठिनाई, न कठिन स्थल

कुछ विषयों के कुछ तथाकथित जिन हार्ड स्पॉट पर वर्षो काम हुआ हैं, फिर भी वे हार्ड स्पॉट वैसे के वैसे हैं, आखिर क्यों? हार्ड स्पॉट जैसी कोई चीज हैं या नही? कहीं कठिनाई का हौव्वा भी हमारी ही देन तो नही? दरअसल कठिनाई किसी विषय में नही होती बल्कि उस विषय के प्रस्तुतिकरण के तरीकों में होती हैं। बच्चों का इससे कोई वास्ता नही होता।

वास्तविकता यह हैं कि हम ऐसे भ्रम से जूझ रहे हैं, जो वहां हैं ही नही। हमें शिक्षण के ऐसे तरीके अपनाने होंगे कि कोई हार्ड स्पॉट जैसी किसी चीज की कोई गुंजाइश ही नही रहे।

न कठिनाई, न कठिन स्थल

शिक्षक का विश्वास बच्चों के सीखने की गति को बढ़ाता है।

यह तो ऐसे ही घर का हैं क्या पढ़ेगा? क्या करे? इनकी समझ में कुछ आता ही नही है? ये पढ़ेंगे ही नही कितनी भी कोशिश कर लो, इनकी आदत ही ऐसी हैं। हमारी ऐसी धारणाओं से बच्चों के सीखने को प्रभावित करती हैं। हम बच्चों को सदैव एक पूर्वाग्रही नजर से देखते हैं। हमें इससे उलट नजरिया अपनाना होगा।

हम अक्सर बच्चे के न सीख पाने का जिम्मेदार दूसरों को ठहराते रहते है। यह स्थिति ठीक नही हैं। जो हमारे हाथ में है वह तो करे। किसी को कमतर साबित करके उसे बदला नही जा सकता और न ही उसे श्रेष्ठ साबित करके। जो हैं जैसा हैं, उसके साथ उसी स्तर पर काम करना होगा। जो तेजी से सीख सकते हैं उनको उनकी गति के हिसाब से मदद देनी होगी और जो पिछड़ रहे हैं उनके साथ मिलकर कारणों को पहचानना होगा और उसी के अनुसार उनकी मदद करनी होगी। यह ठीक नही होगा कि हम एक चीज को पहले से तय करले और सोचें कि इसे करना ही हैं। इसकी बजाय हमें सदैव ऐसे तरीकों के बारें में सोचते रहना चाहिए जो सबके लिए ठीक हैं, और रोचक भी।

सब बच्चे सीख सकते हैं यह विश्वास जरूरी है

सीखने के चरण

सीखना कैसे होता हैं? क्या हमने कभी विचार किया हैं कि हम किसी सूचना या अवधारणा को कैसे ग्रहण करते हैं? इस पूरी प्रक्रिया में सिखाने वाले की क्या भूमिका हैं?

सीखना हमारे अन्दर होता हैं। यह कोई ऐसी क्रिया नही जिसमें लेन-देन जैसी कोई बात हो। शिक्षा के क्षेत्र में सिखाना और ज्ञान देना जैसे शब्द खतरनाक हैं। सीखना स्वयं से होता हैं। हम अपने ही अनुभवों का क्रमिक विश्लेषण करते हुए सीखते है। हमारे मस्तिष्क में सीखना इन चरणों से होकर गुजरता है :-

अनुभव : (देख, सुन, छू, चख, पढ़कर, विचार करके)
चिन्तन : सोचना/विश्लेषण
अनुप्रयोग : स्वयं करना/प्रयोग/विविध तरीकों से अभ्यास,
निष्कर्ष : नतीजे निकालना, सीखना

सीखने की इस पूरी प्रक्रिया को इस चक्र से समझा जा सकता है जो सदैव चलता रहता है :-

जरुरी यही है कि हम सीखने के इस चक्र के आधार पर बच्चों के समक्ष सीखने की विविध परिस्थितियां रचें। बच्चें इस प्रक्रिया से गुजरकर अपने निष्कर्ष स्वयं निकालेंगे। इस तरह से अर्जित ज्ञान व्यवहारिक भी होगा।

सिखाने के तरीके बदलना जरूरी

सिखाने के तरीके बदलना जरूरी

साभार - राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर

सुर्खियां

सितम्बर 2016 से फरवरी 2017

संस्था पंजीकरण दिवस, गणपति स्थापना, शिक्षक दिवसः दिनांक 05.09.2016 को संस्था परिसर में बच्चो व समाज के लोगो को संस्था

विकास की जानकारी देने के लिए पंजीकरण दिवस, गणपति स्थापना व शिक्षक दिवस का आयोजन बडे धूम-धाम के साथ किया गया। राकेश कुमार कौशिक, निदेशक, क्षमा आर. कौशिक, सचिव एवं मुख्य कार्यकारी, सागरमल कौशिक, संस्था संस्थापक का संस्था कार्यकर्ताओं ने श्रीफल, शॉल व साफा बांधकर सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विक्रम जी, ब्रांच मैनेजर एस.बी.बी. जे.) थे। वनस्थली विद्यापीठ की 40 छात्राओं ने भी भाग लिया अंत में गणपति स्थापित कर पूजा की गई।

दंत जांच एंव परामर्श शिविर : दिनांक 06.09.2016 बच्चों में दंत देखभाल व मंजन की जागरूकता के लिए दंत जांच एंव परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डा.शोईब खान ने दंत मंजन करने का तरीका बच्चों को सिखाकर दांतो की देखभाल करने की जानकारी दी 100 बच्चों को जाँच कर टूथपेस्ट दिये गये।

हिन्दी दिवस : दिनांक 14.09.2016 बच्चों में राष्ट्र भाषा का प्रयोग जागरूकता एवं महत्व बताने के लिए हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सुन्दर लेखन हिन्दी मे 10 वाक्य व शब्द बोलना शब्द खेल, बालगीत, बाल कविता आदि प्रस्तुतियाँ करवायी गयी हिन्दी दिवस की जानकारी ईश्वर शर्मा द्वारा दी गई।

दिनांक 16.09.2017 को Regional Institute Education अजमेर द्वारा विद्यालय की विजिट की गई। 100 बच्चों व 3 शिक्षकों ने सम्मिलित शिक्षा, वोकेशनल, आवासीय विद्यालय देखा व बाल संसद की बैठक अवलोकन किया। प्रधानमंत्री सलोनी ने बाल संसद के कार्यों की जानकारी दी गई।

अभिभावक मीटिंग/अर्हत का जन्मदिनः दिनांक 17.09.2016 को अभिभावक मीटिंग आयोजन किया गया। इस में शिक्षण कार्य प्रगति, मूल्यांकन, भौतिक चिकित्सा, वाणी चिकित्सा, साइको प्रोग्राम, खेल गतिविधि, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वॉकेशनल व आगामी कार्य योजना पर शिक्षक व अभिभावकों से चर्चा की गई व लक्ष्य निर्धारित किये गये। तरूण शर्मा व क्षमा आर कौशिक ने मैनेजमेन्ट से जुडी चीजों का समाधान किया। साथ ही अर्हत ने अपना जन्मदिन बच्चों के साथ मनाया।

बाल संसद भंडारा व गणपति विसर्जन : दिनांक 15.09.2016को बाल संसद द्वारा अनन्त चतुर्दशी के उपलक्ष में भंडारे का आयोजन किया गया इस भंडारे का प्रारम्भ प्रधानमंत्री सलोनी कंवर ने गणपति पूजन कर विद्यालय के बच्चों व समस्त स्टाफ ने प्रसाद ग्रहण किया। इस भंडारे के माध्यम से बच्चों में पोषण, समाज सेवा आपसी सहयोग की भावना विकसित करने व बाल संसद के कार्य बताए गए।

कुमार शानू नाईट : किशनगढ़ : दिनांक 18.09.2016को म्यूजिक लवर्स क्लब 300 किशनगढ़ के तत्वाधान में आयोजित कुमार शानू नाईट में विद्यालय से फाल्गुन चौहान, राजवीर सिंह, तरूण शर्मा, क्षमा आर. कौशिक, राकेश कुमार कौशिक ने भाग लिया। म्यूजिक लवर्स क्लब ने मीनू स्कूल को 50,000 का चैक भेट किया व बच्चों ने लेम्प व कार्ड भेट किये।

नवरात्रा स्थापना कार्यक्रम : दिनांक 01.10.2016को बच्चों ने दुर्गा पूजन की समझ विकसित करने व सामाजिक विकास करने के लिए नवरात्रा स्थापना की गई वोकेशनल कक्षा के बच्चों ने डेकोरेशन कार्य किया आरती व डांडिया नृत्य का आयोजन किया गया।

गांधी व शास्त्री जयंती : विद्यालय में 03.10.2017 को बच्चों को महापुरूषों के बारे में जानकारी देने के लिए महात्मा गाँधी व लाल

बहादुर शास्त्री जयंती मनाई गयी। राधेश्याम, सलोनी, राजवीर ने बाल कविता प्रस्तुत की व पायल ने गांधी जी के जीवन मूल्यों के बारें में जानकारी दी।

पपेट शो का आयोजन : राप्रावि. दिनांक 04.10.2016 को दिव्यांग बच्चों द्वारा ग्राम कायड़ में सफाई व स्वच्छता को लेकर पपेट शो (कठपुतली प्रदर्शन) किया गया। राधेश्याम व हरीश ने ढोलक बजाकर सबका मन मोह लिया। यह कार्यक्रम हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के सहयोग से किया गया।

नगर निगम, अजमेर -डांडिया महोत्सव : दिनांक 06.10.2016 को विद्यालय के 29 बच्चों ने नगर निगम, अजमेर द्वारा आयोजित डांडिया महोत्सव में भाग लिया नगर निगम के उप महापौर सम्पत जी साँखला द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किये व श्री प्रीतम जी ने सिनेमा टिकट एवं फाल्गुन को सर्वश्रेष्ठ डांस व ड्रेस के लिए उपहार भेंट किया गया।

विशेष योग्यजन सप्ताह आयोजनः दिनांक 07.10.2016 को विद्यालय में विशेष योग्यजन सप्ताह के उपलक्ष्य में खेलकूद प्रतियोगिता बालगीत बाल कविता का आयोजन किया गया।

दशहरा महोत्सव कार्यक्रम : दिनांक 17.10.2016 को विद्यालय में दशहरा महोत्सव का आयोजन किया गया। रावण का पुतला वोकेशनल कक्षा के बच्चों ने तैयार किया।

बुक बैंक : दिनांक 18.10.2016को ''बच्चों ने की दोस्ती किताबों से '' पुस्तक वितरण कार्यक्रम का आयोजन लायंस क्लब अजमेर वेस्ट के सहयोग से किया गया। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि जिला कलक्टर श्री गौरव गोयल द्वारा किया गया। यह प्रथम अवसर था जब दिव्यांग बच्चों ने जिला कलक्टर के समक्ष पुस्तक पढ़कर सुनाई। कार्यक्रम में बच्चों ने अपनी पंसद की

किताबें चुनकर पढ़ने का आनंद लिया। कार्यक्रम में श्री सतीश बंसल, सुश्री ज्योति ककवानी उपायुक्त नगर निगम, अजमेर धर्मेन्द्र गहलोत मेयर नगर निगम, अजमेर सोमरत्न आर्य समाज सेवी आदि उपस्थित थे।

भरतनाट्यम कार्यक्रम : दिनांक 21.10.2016स्पिक मैके वर्कशॉप एण्ड डिमोस्ट्रेशन, अजमेर रीजन की ओर से भरतनाट्यम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अरूपा की ओर से प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि रेल्वे महा प्रबन्धक श्री पुनीत चावला ने किया। उन्होंने कहा कि हमारी

आने वाली पीढ़ी देश की लोक कला व संस्कृति का परिचय करवायेगी। इस कार्यक्रम में स्पिक मैके अजमेर रीजन कोर्डिनेटर श्री आनंद अग्रवाल, युनाइटेड अजमेर की संयोजिका श्रीमती कीर्ति पाठक, प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ श्रीमती रमा गर्ग व स्पिक मेके के डॉ.एसक़े भाटिया आदि उपस्थित थे।

दीपोत्सव कार्यक्रम : दिनांक 25.10.2016 को दीपोत्सव का

आयोजन सेना के जवानों के संग किया गया। प्रथम अवसर था सामान्य व विशेष बच्चों ने सेना के जवानों के संग दीपावली मनाई इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केप्टन नीतू लहल, मेजर श्री गौतम अहीर, श्री भवानी सिंह सेना के जवान उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के समापन में आचार्य स्त्री एवं प्रसुति रोग विशेषज्ञ जनाना अस्पताल से डा.दीपाली जैन द्वारा घड़ियां भेंट की गई दक्ष वोकेशनल के वुडन सामान की प्रशंसा की गई।

अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला : अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला दिनांक 8नवम्बर से 14 नवम्बर 2016जन जागरूकता कार्यक्रम दिव्यांगों के शिक्षण-प्रशिक्षण व पुर्नवास को लेकर जन जागरूकता के लिए

प्रदर्शनी रंगजी मन्दिर, विकास, आर.टी.डी.सी.में लगाई गई। इन प्रदर्शनियों का उद्घाटन संसदीय सचिव, श्री सुरेश सिंह रावत व नगर पालिका अध्यक्ष, श्री कमल पाठक द्वारा किया गया। विभिन्न मॉडल्स के माध्यम से ईश्वर शर्मा, भंवर सिंह, मुकेश द्वारा संचालित शिक्षा व स्कूल की सेवाओं की जानकरी दी। विशेष शिक्षा से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया गया। पशु पालन विभाग द्वारा विकास प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार किसान आयोग अध्यक्ष, श्री सावरलाल जाट, महिला विकास राज्य मंत्री श्रीमती अनिता भदेल, संसदीय सचिव, श्री सुरेश सिंह रावत, भाजपा देहात जिलाध्यक्ष, श्री बीपी. सारस्वत ने श्री राकेश कुमार कौशिक, निदेशक एवं श्रीमती पद्मा चौहान, व्याख्याता को प्रदान किया। इस कार्यक्रम में तरूण शर्मा, ममता, रामनिवास ने भी जानकारी देने का कार्य किया।

मेराथन : 13.11.2016 जिला प्रशासन अजमेर की ओर से अजमेर में आयोजित मेराथन में विद्यालय के 10 बच्चो व 4 स्टाफ ने भाग लिया। विद्यालय व चाइल्ड लाइन टीम ने सम्मिलित होकर मेराथन में भाग लिया। कलेक्टर श्री गौरव गोयल एवं आईजी श्रीमती मालिनी अग्रवाल ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

जर्मन विद्यार्थियों की विजिट : दिनांक 17.11.2016को दिव्यांग

बच्चो के संग जर्मन विद्यार्थियो ने विभिन्न खेलो में भाग लिया। बाल संसद प्रधानमंत्री सलोनी व यश ने मॉडल से मीनू स्कूल द्वारा दी जा रही सेवाओ में सम्मिलित शिक्षण-प्रशिक्षण के बारे में बताया। बूची, पेराशूट, सृजनात्मक कार्य (की-चैन बनाना) किया।

क्रिसमस डे : दिनांक 23.12.2016को मीनू स्कूल, चाचियावास के बच्चो ने क्रिसमस समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उप महानिरीक्षक, श्री अमित शर्मा है, एवं अध्यक्षता फव्वारा सर्किल चर्च के फादर जे.के. शर्मा ने की, साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती प्रवीण कुलकर्णी एवं शिवभक्त मण्डल के अध्यक्ष एवं सदस्य उपस्थित हुए। कार्यक्रम से पूर्व विद्यालय के सभी बच्चो एवं संस्था द्वारा संचालित सागर कॉलेज के बच्चो ने प्रभु ईशु की सुन्दर झांकी सजाई एवं विभिन्न रंग भरो प्रतियोगिताएं आयोजित की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संस्था निदेशक श्री राकेश कुमार कौशिक ने संस्था परिचय दिया तथा अतिथियों का स्वागत किया। फादर जे.के. शर्मा ने उद्‌बोधन में कहा कि जिस तरह से संस्था इन बच्चों के लिए कार्य कर रही है, यह सही मायने में प्रभु ईशु के जन्म दिवस को मनाने का सही तरीका है, इन बच्चो की सेवा करना ही प्रभु ईशु एवं परमात्मा की सेवा करना है। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की छात्रा मीनाक्षी ने "काल्यो कूद पड़ो मेला में" गीत पर नृत्य प्रस्तुत करके कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। अंत में

बच्चो को सेन्टा क्लॉज एवं फादर द्वारा उपहार में बच्चों को खिलौने दिए गये।

जन जागरुकता कार्यक्रम : दिनांक 12 जनवरी 17, मंगलवार को विद्यालय द्वारा प्रदर्शनी लगाकर जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी व कार्यक्रम राजस्थान में भाजपा सरकार के तीन वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजन किया गया भगवान सहाय शर्मा व ईश्वर शर्मा द्वारा विकलांग बच्चों से जुड़ी सेवाओं और समस्याओं का समाधान कर जागरूक किया गया। इस प्रदर्शनी का अवलोकन भाजपा अध्यक्ष श्री अशोक परनामी व किसान आयोग अध्यक्ष (राज) श्री सांवरलाल जाट, महिला एवं बाल विकास मन्त्री, श्रीमती अनिता भदेल और जिला कलक्टर श्री गौरव गोयल द्वारा कर संस्था कार्यो की प्रशंसा की गई।

मकर संक्रांति उत्सव : दिनांक 14.01.2017 को विद्यालय मे आयोजन बड़े धूम-धाम से किया गया। इस कार्यक्रम का प्रारंभ

मुख्य अतिथि श्री सुनील जैन (समाज सेवी), श्री शंकर सिंह (चिकित्सा विभाग) द्वारा किया गया। इस उपलक्ष्य पर कबड्डी, क्रिकेट, सतोलिया आदि खेल आयोजित किये गये ईश्वर शर्मा ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया अंत में कचौरी व फल वितरित

किये गये।

सोफिया कॉलेज के विद्यार्थियों की विजिट : दिनांक 17.01.2017 को सॉफिया कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा बच्चों के साथ नृत्य, डांस, कविता आदि गतिविधियां की गई।

दिनांक 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन बड़े धूम-धाम के साथ किया गया। इस कार्यक्रम का प्रारंभ मुख्य अतिथि डा. महेश गुप्ता जेएलएन. अस्पताल व श्री महावीर प्रसाद शर्मा श्री दिनेश साहू, एसक़े. जैन रामबाबू गुप्ता द्वारा किया गया संस्था निदेशक राकेश कौशिक व प्रधानमंत्री बाल संसद सलोनी कंवर द्वारा स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में फाल्गुन, मिनाक्षी, मोनिका, पायल व सागर कॉलेज के विद्यार्थियों ने एकल व सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किये। संचालन ईश्वर शर्मा द्वारा किया गया। शिव भक्त मंडल द्वारा मिठाई व स्टेशनरी वितरित की गई।

अभिभावक मीटिंग : दिनांक 11.02.2017 को विद्यालय में अभिभावक मीटिंग का आयोजन किया गया। इस मीटिंग के मुख्य अतिथि कानाराम जी सामरिया (वार्ड पंच) ग्राम पंचायत चाचियवास व सुखाराम

खींची (समाजसेवी) थे डॉ. जगदीश जाधव एसोशियट प्रोफेसर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान द्वारा अभिभावकों से चर्चाकर मुद्दा रखा की हम सब मिलकर स्कूल के लिए क्या कर सकते है अभिभावक नहीं आते उनको आने के लिए प्रेरित करें।

दिनांक 17.02.2017 को विद्यालय के बच्चों की संगीत वाद्य यंत्र बजाने की रुचि को देखते हुए डा. दीपाली जैन (स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ) कॉगो ड्रम भेंट की गई।

व्यावसायिक प्रशिक्षण : दिनांक 22.02.2017 को विद्यालय में मिटटी से विभिन्न चीजें बनाने को लेकर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। देविका मेडम (दक्ष प्रशिक्षक) बच्चों व स्टाफ को विभिन्न चीजें मटकी, बैल, ढक्कन, चूल्हा आदि सिखाया।

सहज योग प्रशिक्षण : दिनांक 27.02.2017 को का आयोजन श्रीमती रेखा जैन श्री विरेन्द्र, डॉ. संदीप अवस्थी आदि द्वारा किया गया। बच्चों में चिडचिड़ापन, गुस्सा, ध्यान कमी आदि को लेकर योग सिखाया

एबिलिटी फैशन वॉक

4 दिसम्बर 2016

मीनू स्कूल चाचियावास के बच्चों द्वारा जवाहर रंगमंच, अजमेर पर एबिलिटी फैशन वॉक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में चित्रकूट धाम पुष्कर के प्रमुख महन्त पाठक महाराज व अजमेर के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, डॉक्टर तथा समाज सेवी लोगों ने बच्चों के साथ रेम्प पर उतर कर दिव्यांग बच्चों का हौसला बढ़ाया। कार्यक्रम में चित्रकूट धाम पुष्कर के प्रमुख महन्त श्री पाठक जी महाराज, श्री एस. पी. मित्तल, श्री राजेद्र गुंजल, श्री संजीव धमीजा, श्रीमती शिल्पी धमीजा, श्री वरूण चौधरी, श्रीमती मधु पाटनी, श्री सतीश बंसल, श्री सोमरत्न आर्य, श्री अजय विक्रम सिंह पूर्व रक्षा सचिव, सुश्री ज्योति ककवानी, श्री सोमरत्न आर्य, श्रीमती भारती श्रीवास्तव, श्री संजय सांवलानी, उपनिदेशक सा.न्याय व अधिकारिता विभाग अजमेर, डॉ. पंकज तोषनीवाल, वरिष्ठ भूवैज्ञानिक आर.के.नाहर, डॉ. संगीता सामन्त, समाजसेवी श्री रामस्वरूप, श्रीमती पूजा गुप्ता, विजय कुमार जैन, सम्पत देवी जैन, श्रीमती कीर्ति पाठक, डॉ.अनिल माहेश्वरी, डॉ.महेश गुप्ता, डॉ.दीपाली जैन,आर. जे. अजय एवं इंजीनियरिंग कॉलेज स्टाफ ने भाग लिया।

एबिलिटी फैशन वॉक झलकियाँ

मुद्रित सामग्री | बुक पोस्ट

प्रतिष्ठा में, _____

_____

_____

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था
ग्राम-चाचियावास, सीकर रोड, अजमेर-305023
Email : rmkm_ajm@yahoo.com, rmkm.a@rediffmail.com
Ph.# : 0145-2794481, Fax : 0145-2794482, Mob.: 9829140992

सौजन्य : Vibha

मुद्रक : प्रगति प्रिन्टर्स, पुरानी मंडी, अजमेर